मोहन मनठार (१२१)

जीमि यशोदा जा बार मन मोहना माणीमि सुख ससुराल जा।। सुन्दर सिहरो सिर पर सोहे रूपु मनोहरु मनड़ो थो मोहे गले गुलनि जो हारु मन मोहना—।१९।।

गोल कपोलिन कुण्डल झलके छिष् जो अमृत अंगिन मां छलके जामो सोहे ज़रीदार मन मोहना—।।२।।

विहांव जी पहिरियइ पीलड़ी धोती दुपटे में सुन्दर लटिकिन मोती सारे जग़ जो सींगार मन मोहना—।।३।।

बखमल जुतिड़ी चरणिन सोभे शिव बृह्मा जो मनड़ो थो लोभे मायड़ी अ जा मनठार मन मोहना—।।४।।

हंसिन खां तुंहिजी गित आ प्यारी सदाई जींमि दूल्ह बनवारी गुलड़िन खां सुकुमार मन मोहना—।।५।।

विहांव जो दींहड़ो भाग सां आयो सितगुर कयड़ो लायो सजायो तनु मनु कयां बलहार मन मोहना—।।६।। मृदु मुस्कान सां चितड़ा चोराये चन्द्र वदन मां थो सुधा वर्षाए भानु नन्दनी अ जा भतार मन मोहना—।।७।।

यशुमित जीवन नन्द जा नन्दन रिसक सन्तिन जे हिंयड़े जा चन्दन रहीं गुलों गुलज़ार मन मोहना—।।८।।

कान्ह कुंअर मुंहिजा प्राण प्यारा जननी जनक जा नैनिन तारा मैगिस मंगलाचार मन मोहना—॥९॥